मनुष्य बनो

वा०मू०
६-०

शरणागति, शुभ संकल्प,

क्षमा, प्रेम,

निष्काम कर्म, ब्रह्मचर्य पालन.

याल फकीर चन्द जी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि-कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जॉय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वी० पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ६—०० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

प्रकाशक

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

मनुष्य बनो

वर्ष २८ | माघ सं० २०३४ वि० फरवरी, १९७८ | संख्या ५

'प्रीत न कर'

जग से प्रीत न कर, रे मन तू जग से प्रीत न कर।
झूठे रिश्ते प्रीत है झूठी, मन को बस में कर।
रे मन तू जग से प्रीति न कर॥

प्रेम है बन्धन, मुक्ति में है सुख चिरन्तन।
मोह भुला दे, तिमिर हटा दे, मन का दीप जलाकर।
रे मन तू जग से प्रीति न कर॥

सब ने लूटा जग है झूठा, बस नाम ही है सांचा।
ध्यान लगा ले मन में बिठा ले, नैनन को बन्द कर।
रे मन तू जग से प्रीत न कर॥

कौन है तेरा, कौन है मेरा, दो दिन का ये बसेरा।
डर बिसरादे मन को बतादे, जीवन है नश्वर।
रे मन जग से प्रीत न कर॥

सम्पादकीय–

गुरु के चरणों में बैठने का जिनको सौभाग्य प्राप्त होता है उनको माया अपने लपेटने में असमर्थ रहती है। काम, क्रोध, लोभ मोह निकट नहीं आते हैं। मन स्वतः ही निर्भय, आत्म ज्ञान, तथा आनन्द में मग्न रहता है। जितना समय गुरु के उपदेशों को श्रवण करने में लगता है उतना ही मन आत्म विभोर होता रहता है। मगर कुछ समय पश्चात संसारिक जीवन में रहते हुये मन फिर अशान्त हो जाता है। माया मोह के जंजाल में लिप्त हो जाता है। इसका कारण क्या है। सन्तों ने इस दशा को स्पष्ट करते हुये कहा है कि गुरु दरबार में मन स्वतः ही प्रभू प्रेम में मगन हो जाता है। अमृत वर्षा में भीग जाता है जिससे संसारिक दुखों की आग उस वर्षा से ठंडी हो जाती है। परन्तु जीव उस अमृत वर्षा को संजोकर रख नहीं पाते हैं। इस कारण कुछ समय पश्चात फिर जीव दुखमय हो जाता है। अगर समय पर अमृत वर्षा को इकट्ठा करके रख लिया जाय अर्थात हृदय रूपी गहर तालाब में उस अमृत वर्षा के जल को इकट्ठा कर लिया जाय तो फिर समय आने पर उसका उपयोग किया जा सकता है। उस समय संसार के दुख मनुष्य को सता ही नहीं सकते।

इस अमृत बाणी के अधिकारी वही हैं जिन्होंने अपना सब कुछ उस परमपिता परमेश्वर को अर्पण कर दिया है वहां न ईर्ष्या है, न द्वेष, न काम है और न क्रोध, केवल सब कुछ उस परम शक्ति का है जिन्होंने हमको जन्म दिया है हमको उस शक्ति को पहिचानने का ज्ञान दिया है।

याद रखो गंगा से जल लेने में, कुये से जल निकालने में, किसी तालाब से भी जल लेने के लिये हर जीव को झुकना पड़ता है तभी हमारी तृप्ति होती हैं। बिना झुके, समर्पित हुये हमारा कल्याण हो

हो नहीं सकता। यह प्रकृति का अटल नियम है।

सन्तों का दरवार हर एक के लिये खुला रहता है। वहां पापी और पुन्य आत्मा सभी के लिये स्थान है। सन्तों का संग अर्थात सतसंग सभी के लिये है। इसमें यह अजीव शक्ति है इसका अनुभव एक बार करके तो देखो।

—प्रभूदयाल मीतल

मौज मालिक

शुभ सूचना

मनुष्य बनो

दयाल मानवता प्रचारक सभा राजेन्द्र नगर नई दिल्ली की ओर से त्रिलोकपुरी, (जमुना पार) की जनता के लाभार्थ एक धर्मार्थ होम्योपेथिक डिस्पेन्सरी ब्लाक नं० २ क्वाटर नं० १६० में प्रारम्भ की है।

इसका उद्घाटन परमदयाल पं० फकीरचन्द जी महाराज के कर कमलों द्वारा दि० ६–२–७८ को प्रातः १०–३० बजे किया गया।

इस अवसर पर हजूर पीरेमुंगा जी महाराज भी उपस्थित थे तथा सैकड़ों की तादाद में त्रिलोकपुरी निवासियों ने इस समारोह में भाग लिया।

इसके संचालन हेतु सभी सतसंगियों, इष्ट मित्रों तथा शुभ चिन्तकों से निवेदन है कि इस पुन्य कार्य में यथायोग्य सहयोग देकर हमको जनता की सेवा करने का अवसर प्रदान करें।

दान की राशि चैक या ड्राफ्ट अथवा नगद महामंत्री दयाल मानवता प्रचारक सभा राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली के पते पर भेज सकते हैं हम उनके आभारी होंगे।

निवेदक

नन्दलाल उर्फ आनन्द दयाल

मंत्री

सतसङ्ग

ले० दुर्गादास 'चमन'

साधो ! सत्संग ही है सार।

१—सतसंग भेद कोई ही पाए सतगुरु का आधारा।
खण्ड ब्रह्माण्ड अखण्ड यह यह सृष्टि है बे अन्त पसारा ॥
ऋषि मुनि व देव लिप्त हैं बुद्धि, तेज अहंकारा।
जीव अजान भया परदेसो क्या जाने बेचारा ॥
सतसंग करो परम पुरुष का हो जाओगे पार।
साधो, सतसंग ही है सार ॥

२—बिन सतसंग शब्द है फीका यह अनुभव की वाणी।
बाद विवाद में पड़कर डूबे गुरु बिन बहुत ज्ञानी।
ज्ञान ध्यान भी माया सूझे द्वैत भाव सब जानी।
सहज समाध है अन्तिम सीढ़ी जाने सन्त सुजानी ॥
मन को छोड़ करो सतसंगत पकड़ो ऊँची तार ॥
साधो सतसंग ही है सार ॥

३—मोक्ष ज्ञान का अधिकारो जो सतसगत में आवे।
बिना नाम और बिना काम ही रंग उस पर चढ़ जावे ॥
मार्ग मुश्किल है यह भाई 'चमन' खोलकर गावे।
सतसंग पूर्ण पुरुष का करके भेद समझ में आवे ॥
दुनिया झूठी, माया रूखी मन अपने से टार।
साधो सतसंग ही है सार ॥

—०—

दूसरी रमैनी [२]

[एकता अनेकता और भ्रम]

१. अन्तर ज्योति शब्द यक नारी ।
हरि[१] ब्रह्मा ताके त्रिपुरारी[२] ॥ १ ॥

२. ते तिरिये भग लिंग अनन्ता[३] ।
काहु न जानल आदि वो अन्ता ॥ २ ॥

३. बाखरि[४] एक बिधाते[५] कीन्हा ।
चौदह ठहर[६] पाट सो लीन्हा ॥ ३ ॥

४. हरि हर ब्रह्मु महंतौ नाऊँ ।
ते पुनि[७] तीन बसावल[८] गाऊँ ॥ ४ ॥

५. तिन पुनि रचल[९] पिण्ड ब्रह्मण्डा ।
छः दर्शन छानवे पाखण्डा ॥ ५ ॥

६. पेट[१०] हि काहु न बेद पढ़ाया ।
सुनति[११] कराय तुरुक[१२] नहिं आया ॥ ६ ॥

७. नारी मो[१३] चित गर्भ प्रसूती[१४] ।
स्वाँग धरे बहुते करतूती ॥ ७ ॥

नोट—१=विष्णु । २=महादेव । ३=अनगिनत । ४=घर, महल । ५=ब्रह्मा । ६=जगह । ७=फिर । ८=बसाया । ९=रचा । १०=पेट में । ११=सुन्नत या मुसलमानी । १२=मुसलमान । १३=मैं । १४=उत्पन्न हुये ।

८. तहिया[1] हम तुम एकै लोहु ।
एकैं प्राण ब्यापै मोहू[2] ॥ ८ ॥
९. एकै ज़नी[3] जना संसारा ।
कौन ज्ञान ते भयो निनारा[4] ॥ ९ ॥
१०. भा[5] बालक भग द्वारे आया ।
भग भोगे ते पुरुष कहाया ॥ १० ॥
११. अवगति[6] की गति काहू न जानी ।
एक जीभ कत[7] कहौं बखानी ॥ ११ ॥
१२. जो मुख होय जीभ दस लाखा ।
तौ कोई आप महंतौ भाखा ॥ १२ ॥

साखी

कहहि कबीर पुकार के, ई लेऊ[8] व्यवहार ।
राम नाम जाने बिना, भव बूड़ि मुआ संसार ॥

उल्था

(१) अन्तर (उन्मुनी अवस्था) ज्योति, शब्द, एक और नारी (यह पाँच अवस्थायें हुईं । (उस नारी से) ब्रह्मा, विष्णु और महेश उत्पन्न हुये । (२) इन तीनों से अनन्त स्त्री पुरुष वाली रचना हुई और किसी को आदि और अन्त की सुध नहीं रही । (३) ब्रह्मा ने एक महल बनाया जिसको चौदह जगह से पाट लिया । (४) फिर जो सृष्टि के तीन मुखिया ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं इन्होंने तीन लोक अपने अपने लिये बना लिये । (५) फिर पिण्ड और ब्रह्माण्ड की रचना हुई । षट दर्शन और छानवे पाखण्ड (मत मतान्तरों) का

१=उस समय । २=मुझमें । ३=माँ । ४=न्यारा । ५=हुआ ६=मालिक (जो सदैव से है और किया हुआ नहीं हैं) ७=कैसे । ८=लय होने वाला ।

प्रवाह चला। (६) किसी ने किसी को पेट में नहीं पढ़ाया था न मुसलमान ही (पेट से) सुन्नत (मुसलमानी) करा के आये थे। (७) नारी में चित्त दिया, गर्भ से निकले और निकाला और नाना प्रकार के स्वांग बना कर अनेक प्रकार के कर्त्तव्य करने लगे। (८) उस समय हमारा तुम्हारा रुधिर एक था और हममें तुम में एक ही प्राण व्यापक था। (९) एक ही माता ने सारे जगत को उत्पन्न किया। (फिर) तुम किस ज्ञान से अपने को औरों से पृथक समझते हो? (१०) जब भग से बाहर आये, बालक कहलाने लगे और जब भग भोगने लगे पुरुष कहलाये। (बस यही अन्तर है कि और कुछ?) (११) अविगत की दशा कोई नहीं जानता। एक ही जिह्वा से उसको कैसे वर्णन करें? (१२) यदि मुख में दस लाख जिह्वायें हों तो कोई महन्त आकर वर्णन करे। (साखी) कबीर पुकार कर कहते हैं कि यह संसार लय होने वाला है। राम नाम के जाने बिना सारा जगत भवसागर में डूब रहा है।

व्याख्या

आदि में सत्ता (हकीकत) अपने में आप गुप्त था छोव या मौज से प्रकाश प्रगट हुआ और और प्रकाश के साथ ही शब्द प्रगट हुआ। शब्द में विचार होता है। उसने सोचा 'मैं एक हूं,' और सोचते ही उससे स्त्री रूप माया प्रगट हुई। यह माया का प्रगट रूप था वरन जहाँ छोव हुई थी वह प्रवाह के साथ उसका सूक्ष्म रूप हुआ जिससे ब्रह्मा विष्णु और महेश उत्पन्न हुये। इन तीनों और माया से आनन्द जोव जन्तु, स्त्री पुरुष प्रगट हुये जो रचना के सम्बन्ध में पड़ कर अपना आदि और अन्त समझने के अयोग्य होगये। ब्रह्मा को चौदह लोक सात ऊपर और सात नीचे, जो तीन लोक अर्थात ब्रह्म लोक, विष्णु लोक और शिव लोक में हैं बिभक्त हुये और तीनों एक एक लोक के अधिष्ठाता बन गये। इस प्रकार पिण्ड और ब्रह्माण्ड की

उत्पत्ति हुई और वाणी रूपी माया के सम्बन्ध में छः दर्शन और छानवे मत जो पाखण्ड और कपट हैं और सत्य को छुपाते हैं उत्पन्न हुये।

छः दर्शन यह हैं :—(१) उत्तर मीमाँसा, (२) पूर्व मीमांसा, (३) साङ्ख्य, (४) योग, (५) न्याय, (६) वैशेषिक।

छानवे पाखण्ड की व्याख्या यों है—

जोगी जंगम से वड़ा, सन्यासी दरवेश।
छठवें कहिये ब्राह्मण, छः घर छः उपदेश॥

दस सन्यासी वारह योगी, चौदह शेख वखाना।
वोद्ध अठारह जंगम अठारह, चौदिस सेवड़ा जाना॥

(बीजक श्री विश्वनाथसिंह जी)

सम्भव है यह विभाग ठीक न हो। काम से काम हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि वाणी द्वारा छः दर्शन और छानवे मतों क प्रचार हुआ जिन्होंने विभाग और भेद उत्पन्न करके अनुचित भेद वाद फैला दिया और मत मतान्तर के झगड़ों में पड़ कर सब तीन तेरह होगये और सत् किसी की समझ में नहीं आया। भला कोई पूछे तो सही, किसने पेट में किस को वेद पढ़ाया था ? पेट में किस की सुन्नत (मुसलमानी) हुई थ. ? फिर यह हिन्दू मुसलमानों के झगड़े की क्या आवश्यकता है ? गर्भ से उत्पन्न होकर (वाणी रूपी) नारी का ध्यान करके लोगों ने अनेक स्वाँग बनाये और भाँति भाँति के काम काज फैलाये। वास्तव में सब एक हैं। सब में एक ही माया से सब की उत्पत्ति हुई है फिर किस ज्ञान का सहारा ले लेकर लोग पृथक् हो होकर भेद वाद में पड़े हैं। जब गर्भ से निकला तो जीव बालक कहलाया और जब खेलने लगा तब पुरुष हुआ। यह बात स्पष्ट दिखलाई देती है और इतना ही भेद प्रतीत होता है।

इन में से उसका पता किसी को भी नहीं है जो न कभी आता है, न जाता है, न जन्मता है, न मरता है एक जिह्वा से उसका वर्णन कैसे किया जाये। दस लाख जिह्वा मुंह रखते हुये कोई महान पुरुष (महन्त) इस का वर्णन नहीं कर सकता।

कबीर साहिब डंके की चोट कहते हैं कि संसार लय होने वाला है, स्थिर नहीं किन्तु नाशमान है। शोक है एक रामनाम के जाने बिना संसार के समुद्र में सब डूबे जारहे हैं।

तीसरी रमैनी (३)

[सृष्टि और भ्रम]

१- प्रथम आरम्भ कौन के भाऊ[1] ।
दूसर प्रगट कीन सो ठाऊ[2] ।। १ ।।
२. प्रगटे ब्रह्मा विश्नु शिव शक्ती ।
प्रथमैं भक्ति कीन्ह जिव युक्ती ।। २ ।।
३. प्रगटे पवन पानी औ[3] छाया ।
बहु विस्तार कै प्रगटी माया ।। ३ ।।
४. प्रगटे अण्ड पिण्ड ब्रह्मण्डा ।
पृथ्वी प्रगट कीन्ह नव खण्डा ।। ४ ।।
५. प्रगटे सिध साधक सन्यासी ।
ई सब लाग रहे अविनाशी ।। ५ ।।
६. प्रगटे सुर नर मुनि सब झारी[4] ।
तेहि[5] के खोज परे सब हारी ।। ६ ।।

नोट--१=भाव, बिचार। २=स्थान। ३= और। ४=यक वारगी ५=वह भी।

साखी

जीव सीव सब प्रगटे, वै ठाकुर सब दास ।
कबीर और जाने नहीं, यक राम नाम की आस ॥

उल्था

पहिले भाव रूप जगत् हुआ फिर उसका स्थान बना। (२) ब्रह्मा, बिष्णु, महेश और शक्तियाँ उत्पन्न हुईं। पहिले जीव ने उनकी भक्ति का यत्न सोचा। (३) वायु जल और छाया उत्पन्न हुये और माया ने फैल कर अपना विस्तार किया। (४) अण्ड, पिण्ड और ब्रह्मण्ड प्रगट हुये और पृथ्वी के नव भाग होगये। (५) तब सिद्ध, साधक और सन्यासी उत्पन्न होकर अविनाशी के ध्यान में मग्न हो रहे। (६) देवता, मनुष्य और मुनि ने प्रगट होने पर सत की खोज में बहुत कुछ हाथ पाँव मारा परन्तु सब हार कर थक रहे। (साखी) जीव और शिव ने प्रगट होकर दास और स्वामी भाव का प्रचार किया। शिव स्वामी और जीव उनके सेवक हुये। इनमें से कबीर का ध्यान किसी की और नहीं है, केवल एक राम नाम की आस है।

व्याख्या

पहिले सृष्टि सूक्ष्म और मान्सिक होती है। उसमें सूक्ष्म तत्व रहता है। इसके पीछे स्थूल जगत बनता है जैसे काम के पहिले मनुष्य के मन में उस काम का विचार ही उत्पन्न होता फिर वही विचार कार्मिक वस्त्र पहिन कर स्थूल रूप में प्रगट होता है। इसी सूक्ष्म रचना में प्रकृति की सारी दिव्य शक्तियाँ होती हैं जिनमें ब्रह्मा विष्णु महेशादि शक्तियाँ सम्मिलित हैं और मनुष्य इन्हीं को अपने से उच्च जान कर पूजने लगता है। इसी सूक्ष्म रचना उतर कर महा स्थूल तत्व आकाश, जल, वायु आदि उत्पन्न होकर अण्ड, पिण्ड ब्रह्मण्ड और पृथ्वी के नव भाग के रूप में प्रगट होते और माया का कार बार अधिकता के साथ होने लगता है। मा और

कोई वस्तु नहीं है। प्रकृति का नाम माया है। जो सूक्ष्म समझ वाले सिद्ध साधक आदि उत्पन्न हुये वह जो इससे हट कर अविनाशी के स्मरण में निमग्न हो रहे परन्तु देवता ऋषि, मुनि आदि तत्व विचार के समझने में प्रयत्न करने लगे। फिर भी गरम तत्व और निज गुण का पता न पाकर विस्मित होगये और उनको मानना पड़ा कि वह समझ से बाहर है। साधारण जीव ने तो शिव आदि का आराधन करके उनको स्वामी (मालिक) और अपने आप को उनका दास समझ लिया। यह सबके सब भूल भ्रम में पड़े। कबीर साहिब ने इनमें से किसी की ओर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने केवल राम नाम को परम तत्व जान कर उसी की आस लगाई।

चौथी रमैनी (४)

(गुरु की दया)

१. प्रथम चरन गुरु कीन्ह विचारा।
कर्ता[१] गावै सिरजन[२] हारा ॥ १ ॥
२. कर्म हि करि कै जग बौराया[३]।
शक्ति भक्ति लै बांधिन[४] माया ॥ २ ॥
३. अद्भुत रूप जाति[५] की बानी।
उपजी प्रीति रमैनी ठाना[६] ॥ ३ ॥
४. गुनी[७] अनगुनी[८] अर्थ महिं आया।
बहुतक जने[९] चीन्ह नहिं पाया ॥ ४ ॥

नोट–१=मालिक। २=ब्रह्मा उत्पन्न करने वाला ३=पागल हुआ। ४=बाँधा। ५=भाँति भाँति। ६=सुनाय। ७–सगुण उपासक ८=निर्गुण उपासक। ९=लोग।

५. जो चीन्है ताको निर्मल अंगा[1] ।
अन चीन्हे नल[1] भये पतंगा ॥ ५ ॥

साखी

चीन्हि चीन्हि क्या गावहु बौरे । बानी परी न चीन्ह ।
आदि अन्त उत्पति प्रलय, सब आपुहि[3] कहि दीन्ह ॥

उत्था

(१) जगत् की आदि में गुरु ने विचार किया कि जीव ने (भूल से) ब्रह्मा को मालिक समझ लिया । (२) जिसने कर्म धर्म और भ्रम के जाल फैला कर जगत को पागल बना दिया और माया ने सब को भक्ति और शक्ति (सिद्धि आदि) के बन्धन से वांध लिया । (३) यह दशा देख कर गुरु ने) नाना प्रकार की वाणी कही और जीवों पर दया (प्रीति) करके रमैनी सुनाई । (४) सगुन और निर्गुण उपासकों में से किसी ने उसको नहीं समझा और बहुतों को तो उसकी पहिचान तक नहीं आई । (५) जो इस वाणी को पहिचान ले वह सूक्ष्म बुद्धि वाला बन जाये । बिना समझे हुये मनुष्य पतंगे के सदृश जलता है । (साखी) देखो जीवो ! तुमने गुरु की बाणी नहीं समझी । समझ समझ कर उसको गाओ । गुरू ने आप ही आदि अन्त, उत्पत्ति और प्रलय को विस्तार पूर्वक वर्णन कर दिया है ।

व्याख्या

गुरु ने देखा कि संसार ने भूल से ब्रह्मा को मालिक समझ रक्खा है जिसने कर्म की मर्यादा चला कर जीवों को भ्रम में डाल दिया है और कर्म के सम्बन्ध में भक्ति और शक्ति की जाल में फँसा दिया है । गुरू (कबीर) को दया आई और उसने दया से रमैनी और नाना प्रकार की वाणी सुनाई । सगुण और निर्गुण उपासना करने वालों

१=शरीर । २=मनुष्य । ३=आपही आप ।

में से किसी ने उसको नहीं समझा और न उसका अर्थ जाना जिन्होंने गुरु की वाणी को समझा वह सूक्ष्म बुद्धि वाले और अनुभव बन गये। इसके न समझने ही के कारण मनुष्य पतंगे के समान भूल और भ्रम के दीपक पर गिर कर भस्म हो रहे हैं। ऐ मनुष्यों! वाणी का अर्थ तुमने नहीं समझा। उसको समझ समझ कर गाओ क्योंकि इस वाणी में गुरु नें आप ही आप आदि अन्त, उत्पत्ति और प्रलय की सारी बातें सुना दी हैं।

पांचवीं रमैनी (५)

[द्वन्द]

१. कहाँ लो[1] कहौं युगन की बाता।
भूले ब्रह्म न चीन्हे त्राता[2] ॥ १ ॥

२. हरि[3] हर[4] ब्रह्मा के मन भाई।
बिबि[5] अक्षर लै युक्ति बनाई ॥ २ ॥

३. बिबि अक्षर का किया बिधाना[6]।
अनहद शब्द ज्योति परमाना ॥ ३ ॥

४. अक्षर पढ़ि गुनि राह चलाई।
सनक सनन्दन के मन भाई ॥ ४ ॥

५. वेद किताब कीन्ह बिस्तारा।
फैलि गैल[7] मन अगम अपारा ॥ ५ ॥

६. चहु जुग भक्तन बांधल[8] बाटी[9]।
समझि न परी मोटरी[10] फाटी ॥ ६ ॥

नोट—१=तक। २=मालिक, रक्षक। ३=विष्णु। ४=महेश ५=दो ६=प्रबन्ध, प्रयत्न। ७=गया। ८=बाँधा। ९वाट, मार्ग। १०=बोझ:

७. भै[1] भै पृथ्वी चहुं दिशि धावै ।
स्थिर होय न औषध[2] पावै ॥ ७ ॥
८. होय बिहिश्त जो चित न डुलावै ।
खसमें छाँड़ दोजख[3] को धावै ॥ ८ ॥
९. पूरब दिशा हंस गति[4] होई ।
है समीप सन्धि[5] बूझै कोई ॥ ९ ॥
१०. भक्ता भक्तिन कीन्ह शृंगारा ।
बूड़ि गयल सब माँझहिं धारा ॥ १० ॥

साखी

बिन गुरु ज्ञानै द्वन्द भव, खसम कही मिलि बात ।
युग युग कहवइया[6] कहै, काहु[7] न मानी जात ॥

उल्था

(१) कहाँ तक युगों की बात कहूं ! ब्रह्मा भूला और उसने सच्चे मालिक को नहीं पहिचाना । (२) ब्रह्मा विष्णु और महेश ने दो अक्षर छाँट लिये और उनको पसन्द कर के युक्ति निकाली । (३) दो अक्षरों को लेकर (धार्मिक) मर्य्यादा चलाई और उसके अनुमोदन में अनहद शब्द और ज्योति का प्रमाण दिया । (४) अक्षर को पढ़ गुन कर राह चलाई जो सनक सनन्दन के मन को भायी । (५) वेद और किताब (कुरान) का प्रचार हुआ । राह खुल निकली जो मन को अगम और अपार प्रतीत हुई (६) चारों युगों में भक्तों ने राह बांधी परन्तु इस सम्बन्ध में उनको सत् की समझ नहीं आई और (कर्म्म) का बोझ फट गया । (७) पृथ्वी बहक बहक कर चारों ओर दौड़ने लगी । न उसको शान्ति मिलता है न

नोट—१=बहकते हुये । २=दवा । ३=दोजख, नर्क । ४=चाल । ५=मिलाप । ६=कहने वाला । ७=किसी से भी ।

औषधि हाथ आती है । (८) यदि चित्त एकाग्र हुआ तो स्वर्ग में गये । यदि इष्ट छूट गया तो नर्क का दुख मिला । (९) (यह दो अक्षर की दो राहें हैं परन्तु) हंस को चाल पूर्ब की ओर है । मिलाप का स्थान निकट है परन्तु दिखलाई नहीं देता । (१०) भक्तों ने भक्ति, माया ही का शृंगार किया और सब बीच समुद्र में डूब कर मर गये । (साखी) गुरु ने मिलकर बात कही कि बिना गुरु के ज्ञान के यह द्वन्द जगत् हुआ है । कहने वाला तो युगों से रावर कहताब चला आता है । परन्तु कोई नहीं सुनता ।

व्याख्या

वि बि अक्षर=दो=द्वन्द जैसे ब्रह्मा और माया, ईश्वर ओर प्रकृति, पाप और पुण्य, स्वर्ग और नर्क, लोक और परलोक, गमन और आगमन, बेद और कुरान, बाहिर और भीतर, समष्टि और व्यष्टि ।

सन् का ज्ञान ब्रह्मा को भी नहीं हुआ । यह भूल और भ्रम आज का नहीं है किन्तु युगों से है । अन्त में उन्होंने यह समझा कि दो वस्तु मुख्य हैं और दो ही तत्व हैं और उनके प्रचार और शिक्षा के सम्बन्ध में मत मतान्तर फैले । यह दो गुण ब्रह्मा विष्णु और महेश (देवता) और सनक सनन्दन आदि (ऋषियों) को भाये और अनहद शब्द और ज्योति के प्रमाण से उनको सिद्ध किया अर्थात् दो प्रकार के साधन—दृष्टि साधन और शब्द श्रवण को सत्य माना क्योंकि इनही से बाहिरी और अन्तरी ज्ञान प्राप्त होता है परन्तु इनकी समझ लेकर जो वेद और कुरान ने राह निकाली वह मनको अगम और अपार प्रतीत हुई । भक्तों ने हर युग में भक्ति की नई नई प्रणाली चलाई परन्तु कर्म से छुटकारा नहीं मिला और कर्म का बोझ जो सर पर था ऐसा फटा कि उसका सँभालना कठिन होगया । कभी लोक में रहे, कभी परलोक में गये और फिर परलोक

से लोक में आये। यदि इष्ट का ध्यान सच्चा बना तो स्वर्ग नहीं तो नर्कगामी हुये। संसार बहकता हुआ इसी द्वन्द के चक्र में है। न उसे स्थिरता है न शान्ति क्योंकि द्वन्द में स्थिरता और शान्ति नहीं है। इनके विरुद्ध हंसों की चाल अलग और न्यारी है। वह राह पूर्व की ओर जाती है और प्रकाश की राह है। वह बाहिर नहीं है किन्तु अपने अन्तर है परन्तु दिखलाई नहीं देती। इस भूल और भ्रम का परिणाम यह हुआ कि भक्तों ने भी भूल से माया ही को इष्ट बनाया। द्वन्द की रचना माया में है और सब संसार के समुद्र में डूब रहे हैं। गुरू (कबीर) युगों से बराबर पुकारते चले आरहे हैं कि द्वन्द से बचो' बिना गुरू के ज्ञान के इससे छुटकारा नहीं है' परन्तु इसको मानता कौन है!

छटवीं रमैनी (६)

[तत्त्व]

१. बरनहुं कौन रूप औ[1] रेखा।
दूसर कौन आहि[2] जो देखा ॥ १ ॥
२. ओंकार आदि नहिं वेदा।
ताकर[3] कहहूँ कौन कुल भेदा ॥ २ ॥
३. नहिं तारा गन नहिं रवि[4] चन्दा।
नहिं कछु होत पिता के बिन्दा[5] ॥ ६ ॥
४. नहिं जल नहिं थल[6] नहिं थिर पवना[7]।
को[8] धरे नाम हुकुम को बरना[9] ॥ ४ ॥

नोट—१=और। २=हैं। ३=उसका। ४=सूर्य। ५=बुन्द। वीर्य। ६=पृथ्वी। ७=वायु। ८=कौन। ९=कहे।

५. नहिं कछु होत दिवस अरु राती।
ताकर कहहूं कौन कुल जाती ॥ ५ ॥

साखी

शून्य[१] सहज स्मृती[२] ते, प्रगट भई यक जोत।
बलिहारी ता पुरुष छबि, निरालम्ब[३] जो होत॥

उत्था

(१) उसके रूप रेखा का क्या बर्णन किया जाये ! दूसरा कौन है जिसने उसको देखा है ! (२) वह न ओंकार है न आदि वेद है। उसके कुल के विषय में क्या कहा जाये। (३) न वहं तारा गण, न सूर्य्य और न चन्द्र है। न उसमें पिता के वीर्य से कुछ उत्पत्ति हुई या होती है। (४) न वह जल है न थल है न स्थिर वायु है। कौन उसका नाम रक्खे और हुक्म सुनाये ! (५) न बहाँ दिन है न रात है। उसका कुल और जाति कौन ठहराये ! (साखी) शून्य में सहज स्मृति से एक प्रकाश प्रगट हुआ जो बिना किसी आधार के है उस पुरुष की छबि की बलिहारी है।

व्याख्या

न वह है न यह है। नेति !! नेति !!! कोई उसको क्या कहे ! वह किसी के आधार पर नहीं है। निराधार और अपना आप आधार है।

सातवीं रमैनी (७)

(सत्य)

१. जहिया[४] होय पवन नहिं पानी।
तहिया[५] सृष्टि कौन उतपानी[६] ॥ १ ॥

नोट—१=सुन्न। २=स्मरण। ३=बिना आधार वाला। ४—जब। ५=तब। ६=उत्पन्न किया।

२. तहिया होत कली नहिं फूला ।
तहिया होत गर्भ नहिं मूला[1] ।। २ ।।
३. तहिया होत न विजा वेदा ।
तहिया होत शब्द नहिं खेदा[2] ।। ३ ।।
४. तहिया होत पिण्ड नहिं बासू[3] ।
न धर[4] धरणि[5] न गगन[6] अकासू ।। ४ ।।
५. तहिया होत गुरू नहिं चेला ।
गम्य[7] अगम्य[8] न पन्थ दुहेला[9] ।। ५ ।।

साखी

अवगति[10] की गति क्या कहुँ, जाको गांव न ठाम ।
गुण बिहूना[11] पेखना[12], का कहि लीजै नाम ।।

नोट—व्याख्या और टीका की आवश्यकता नहीं है क्योंकि अर्थ बहुत ही स्पष्ट है ।

———

आठवीं रमैनी (८)

[वेदान्त विचार]

१. तत्वमसी[13] इनके उपदेशा ।
ई[14] उपनिषद कहै सन्देशा ।। १ ।।
२. ऊ[15] निश्चय उनके बड़ भारी ।
वाहि[16] कि[17] वर्णन करै अधिकारी ।। २ ।।

नोट--१=जड़ । २=दुख । ३=बसना रहना । ४=पाताल । ५=भूमि ६=आकाश । ७=सतगुण । ८=निर्गुण । ९=द्वन्द । १०=जो उत्पन्न न हुआ हो । ११=विहीन, खाली । १२=देखना । १३=वह तू है । १५=यह। १४=वह । १६=उसको । १७=कैसे ।

३. परम तत्व का निज परमाना[1] ।
सनकादिक नारद सुख[2] माना ॥ ३ ॥

४. याज्ञ वल्क औ जनक सम्बादा ।
दत्तत्रयी वही रस स्वादा ॥ ४ ॥

५. वही वशिष्ट राम मिल गाई ।
वही कृष्ण ऊधव समझाई ॥ ५ ॥

६. वही बात जो जनक दृढ़ाई ।
देहै धरे विदेह कहाई ॥ ६ ॥

साखी

कुल अभिमान खोय कै, जियत[3] मुआ नहिं होय ।
देखत जो नहिं देखिया, अदृष्ट[4] कहावै सोय ॥

उल्था

इनका उपदेश 'तत्त्वमसी'—'तत्, त्वम, असी' है अर्थात 'तू वह है ।' जो जीव है वही ब्रह्म है । उपनिषद् भी यही सन्देश सुनाते हैं । (२) उनको इस पर बड़ा निश्चय है (परन्तु) अधिकारी उसको कह कैसे सकता है ! (३) परम तत्व अपना आप प्रमाण है अर्थात स्वत: सिद्ध है । सनक, सनन्दन, सनत्कुमार, नारद और शुकदेबजी ने इसे माना है (४) याज्ञवल्क्य और ज क के सम्वाद में इसी का वर्णन है और दत्तात्रेय ऋषि को इसी रस का स्वाद मिला है । (५) राम और वशिष्ट ने मिलकर इसी राग को गाया है । कृष्ण ने भी उद्धव को यही समझाया है । (६) जनक ने इसी निश्चय को दृढ़ करके शरीर रखते हुये विदेह की पदवी पाई । (साखी) (परन्तु यह कठिन मार्ग है) जाति के अभिमान को त्याग कर जीते जी नहीं मरा जाता । जो देखते हुये नहीं देखता है उसी का नाम अदृष्ट है ।

नोट=१=प्रमाण । २=शुक्रदेबजी । ३=जीते जी । [४] दिखाई न देने वाला ।

तत्त्व स्वम् असी--'तू वह है।' यह वेदान्त और उपनिषदों का सन्देश है जिस पर लोग दृढ़ विश्वास रखते हैं परन्तु प्रश्न यह है कि यह कथन किस में होता है ? यदि एक है तो एक में प्रश्नोत्तर कैसे किये जाते हैं ? एक एक को एक न कह सकता है न सुन सकता है। यदि यह कहा जाये कि प्रमाण के लिये यह सन्देश सुनाये जाते हैं तो परम तत्व अपना आप प्रमाण है। उसको किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है सारे ऋषि मुनि, राम' कृष्ण, वशिष्ट, नारद, दत्तात्रेय, सनकादिक और जनक, इसी विचार को दृढ़ करते रहे। इसी के दृढ़ करने से देहधारी जनक विदेह कहलाया। यदि यह सिद्धान्त निस्सन्देह दृढ़ है तो फिर उसका दृढ़ाना कैसा ! दृढ़ तो वह बात की जाती है, जो अदृढ़ हो। जिसमें पहिले निबलता और फिर दृढ़ता आई वह तो बदलने वाली वस्तु है। दृढ़ता के पश्चात वह फिर निबल हो जायेगी। इससे उसे छुटकारा नहीं। इसलिये यह प्रयत्न ठीक नहीं। इसके अतिरिक्त ऐसे लोग कहाँ हैं जो जीते जी मर कर रहें जाति अभिमान को मिटाना और अपने आप को खो देना सहल नहीं है। सत् इससे परे है। जो दिखलाई देता हुआ नहीं दिखाई देता वहीं अदृष्ट है। इसको समझो और बस !

—०—

नवीं रमैनी (९)

[माया की बेड़ी]

१. बाँधे अष्ट[१] कष्ट[२] नौ सूता[३]।
यम[४] बाँधे अंजनी[५] के पूता ॥ १ ॥

नोट— १=अष्टाङ्ग योगी। २=तपस्वी। ३=रस्सी (४) यमराज [५] माया।

२. यम के बाहन[1] बाँधिन[2] जनी[3] ।
बाँधे सृष्टि कहा लौ[4] गनी[5] ॥ २ ॥
३. बाँधे देव तैंतीस करोरी ।
सुमिरत बंदि[6] लोह[7] गौ[8] तोरी ॥ ३ ॥
४. राजा[9] सुमिरे तुरिया[10] चढ़ी ।
पंथी[11] सुमिरि नाम लै बढ़ी ॥ ४ ॥
५. अर्थ बीहीना[12] सुमिरै नारी[13] ।
परजा[14] सुमिरै पुहुमी[15] झारी[16] ॥५॥

साखी

बंदी[17] मनाय फल पावहीं, बंदि दिया सो देव ।
कहैं कबीर सो उबरे, निस[18] दिन नाम हि लेव ॥

उल्था

(१) अष्टाङ्ग योगी बँधे । तपस्या करने वाले तपस्वी नौ प्रकार की भक्ति के रस्सों से जकड़े गये और यमराज ने माया के पुत्रों के पाँव में बेड़ी डाल दी । (२) यम के सहायक विद्या और अविद्या ने बार बार सबको बाँधा । कहाँ तक बताया जाये ! सारी सृष्टि बँधी हुई है । (३) तैंतीस करोड़ देवता बँधे हैं जिनके सुमिरन करने से (मूर्ख जीव समझते हैं) यह लोहे की जंजीर टूट जायेगी । (४) राज योग के अभिमानी सुमिरन करने से तुरिया को पाते हैं । पथाई नाम के सुमिरन से आगे की ओर बढ़ते हैं । (५) एक अक्षरी (अर्थ

नोट—१=साथी । २=बाँधा । ३=बार बार । ४=तक । ५=गिन्ना । ६=जंजोर । ७=लोहा । ८=गये । ९=राज योगी । १०=तुरिया अवस्था । ११=पंथाई । १२=बीहीन, खाली । १३=माया । १४=सर्व साधारण । १५=फूल । १६=झाड़ते हैं । १७=जंजीर । १८=रात ।

बिहीन) मन्त्रों के सुमिरन करने वाले माया ही को जपते हैं। (प्रजा अर्थात् सर्व साधारण सुमिरन से फूल झाड़ते हैं। (यह नहीं जानते कि फूल झाड़ने के पश्चात् फिर फल और बीज उत्पन्न होंगे । (साखी) जंजीर को स्तुति गाने वाले वैसे ही फल पाते है। देवता (वास्तव में) फँसाने वाले और जंजीर में जकड़ने वाले हैं। कबीर साहिब कहते हैं। जिनको रात दिन नाम की लव है (केवल) वही बचते हैं।

व्याख्या

योगियों के लिये योग का अभिमान और तपस्वियों के लिये नवधा भक्ति का अभिमान बन्धन का कारण है। विद्या और कविता दोनों ही बाँधने वाली बेड़ियाँ हैं। यमराज ने सबको अपने बश में कर रक्खा है। मूर्ख यह समझते हैं कि देवता बन्धन को काटेंगे। परन्तु सच्ची बात तो यह है कि वह आप बँधे हैं मानो राजयोगी तुरिया पद को प्राप्त होंगे, माना पन्थाई ऊँचे चढ़ेंगे परन्तु वह तुरिया पद और ऊँचे चढ़ना भी बन्धन है। जो लोग एक अक्षरी अर्थ विहीन मन्त्र जपते हैं वह माया ही के उपासक हैं। सर्ब साधारण को सुमिरन करने से यद्यपि कुछ अच्छी अवस्था थोड़े दिनों के लिये प्राप्त हो परन्तु उसका फल और संस्कार तो रहेग। वह बन्धन से कैसे छूटेंगे। लोग जंजीर (माया) और जंजीर के गढ़ने वाले देवताओं के जाल में उनी का फल पाते हैं। मुक्ति उनके लिये है जो नाम की सहज रीति से लव लगाये हुए हैं। (उनके लिये बन्धन नहीं है।)

दसवीं रमैनी (१०)

[बन्धन और सहज नाम का प्रताप]

१. राही[1] लै पिपराही[2] वही[3] ।
करगी[4] आवत काहु न वही ॥ १ ॥

२. आई करगी भो[5] अजगूता[6] ।
जन्म जन्म यम पहिरे बूता[7] ॥२॥

३. बूता पहिर यम करै पयाना[8] ।
तीन लोक में कीन्ह समाना ॥ ३ ॥

४. बांधे ब्रह्मा विष्णु महेशू ।
सुर नर मुनि औ बाँध गणेशू ॥ ४ ॥

५. बाँधे पवन पावक[9] नभ नीरू[10] ।
चन्द्र सूर्य दाँधे दोऊ बीरू ॥ ५ ॥

६. साँच मन्त्र बाँधे सब झारी[11] ।
अमृत वस्तु न जानै नारी ॥ ३ ॥

साखी

अमृत वस्तु जाने नहीं, मगन[12] भये कित[13] लोय[14] ।
कहहि कबीर कामो[15] नहीं, जीवहि[16] मरन न होय ॥

उल्था

(१) पन्थाई राही कहलाते हैं । यह अपने अभिमान में पीपल के जंगल में बहे । किसी ने यह उनको तहीं बताया कि इस राह में बाढ़ भी आती रहती है । (२) चलने को तो चले परन्तु बाढ़ के आते ही

नोट—१=पंथाई । २=पीपल का जंगल । ३=बहे । ४=बाढ़ । ५=हुआ । ६=युक्ति भूल गई । ७=शक्ति । ८=विचार, इरादा । ९=आग । १०=पानी । ११=इकबारगी । १२=भूल गये १३=कितने । १४=लोग । १५=काम । १६=जीवन ।

उनकी सारी शक्तियाँ भूल गईं ओर जन्म जन्म में यमराज ने उन पर नई नई शक्तियों से आक्रमण किया। (३) इन शक्तियों को लेकर यमराज ने इरादा करके तीनों लोकों को समान कर दिया। (४) ब्रह्मा, बिष्णु, महेश, सुर, नर, मुनि और गणेश को बाँध लिया। (५) अग्नि, वायु, आकाश, जल और दोनों राह चलने वाले शूर वीर सूर्य और चन्द्रमा बन्धन में हैं। (६) (झूठे मन्त्रों को कौन कहे) सच्चे मन्त्रों के जपने वाले बँध गये क्योंकि माया रूपी नारी अमृत को नहीं जानती। (साखी) अमृत वस्तु के न जानने से कितने लोग भूल और भ्रम से फँस गये क्योंकि कबीर साहिब के कथनानुसार जिनमें काम (इच्छा) नहीं है उन्हीं को जन्म मरण नहीं होता।

व्याख्या

आदर्श और वस्तु है और साधन और वस्तु है। आदर्श और साधन के न समझने से लोग भूल कर बैठते हैं। गुरुमत चाल नहीं चलते, मन मत चाल चलते हैं और धोका खाते हैं। पंथाइयों ने पंथ को ही सब कुछ समझ लिया। भ्रम की बाढ़ आई। बुद्धि जाती रही और यमराज के नये नये बन्धनों में उनको फँसा दिया: पंथ यदि कोई वस्तु है तो केवल साधन मात्र है, आदर्श नहीं है। आदर्श कुछ और ही वस्तु है। यह दशा केवल इस मृत्युलोक ही को नहीं है किन्तु देव लोक के अधिष्ठाता भी मन मत चाल के कारण बन्धन में हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सुर, नर, मुनि और गणेश सब इसी रोग में फँसे हुए हैं। चलायमान अग्नि, जल, वायु, सूर्य, चन्द्र और आकाश सब अपनी चाल ही के बन्धन में फँसे हुए हैं और उसका फल भोग रहे हैं। जो सच्चा मन्त्र जपते हैं वह उसी के अभिमान के पंजे में जकड़े हुए हैं क्योंकि माया में अमृत नहीं है। जो कोई कामना या बासना लेकर काम करता है वही कामना माया हो जाती है और उनको मार देती है। देखो! सब कैसे भूले हैं! अमृत वस्तु की समझ नहीं है। साधनों में मग्न होगये। कबीर साहिब कहते हैं—'जन्म-

मरण केवल उसके लिये नहीं है जो बासना रहित है।'

ग्यारहवीं रमैनी (११)

[उपदेश]

१. आंधरी गुष्टि[1] सृष्टि भई बौरी।
तीन लोक महैं लागि ठगौरी[2] ॥ १ ॥

२. ब्रह्महि ठग्यो नाग[3] संहारी[4]।
देवन सहित ठग्यौ त्रिपुरारी[5] ॥ २ ॥

३. राज ठगौरी विष्णु हि परी।
चौदह भुवन केर[6] चौधरी[7] ॥ ३ ॥

४. आदि अन्त जेहि काहु न जानी।
ताको डर तुम काहे मानी ॥ ४ ॥

५. ऊ[8] उतंग[9] तुम जाति पतंगा।
यम घर किहेऊ[10] जीव[11] को संगा ॥ ५ ॥

६. नीम कीट[12] जस नीम पियारा।
विष को अमृत कहत गँवारा ॥ ६ ॥

७. विष के संग कौन गुन होई।
किंचित[13] लाभ मूल[14] गौ[15] खोई ॥ ७ ॥

८. विष अमृत गौ एकै सानी।
जिन जाना तिन विष कै[16] मानी ॥ ८ ॥

९. कहा[17] भये नल[18] सुध[19] वेसूझा[20]।
बिन परिचय[21] जग मूढ़ न बूझा ॥ ९ ॥

नोट—१=बात चीत। २=टगना। ३=शेषनाग। ४=मारा ५=महेश। ६=के। ७=मुखिया। ८=वह। ९=ऊँचा। १०=किया। ११=जीवन। १२=कीड़ा १३—थोड़ा भी। १४=पूजी। १५=गयी। १६=समझकर। १७=क्या। १८=मनुष्य। १९=बुद्धि २०=अज्ञान। २१=पहिचान।

१०. मति[1] के हीन[2] कौन गुण कहई।
लालच लागे आशा रहई ॥ १० ॥

साखी

मुवा[3] है मरि जाहुगे, मुवे की बाजी ढोल।
स्वप्न सनेही[4] जग भया, सहदानी[5] रहि गो[6] बोल ॥

उल्था

(१) संसार अन्धों की बात चीत में बावला होगया। तीन लोक में ठगो हो रही है। (२) ब्रह्मा ठगा गया। शेष नाग मारा गया। देवताओं सहित महादेव धोका खा गये। (३) विष्णु को राज के अभिमान ने ठगा। वह चौदह लोक के मुखिया हैं। (४) जिसका आदि अन्त कोई नहीं जानता तुमको क्यों उसका डर हुआ ? (५) वह ऊँची बस्तु है और तुम पतंगे की जाति हो। जीवन पर्यन्त के लिये यम के यहाँ अपना घर बना लिया। (६) नीम के कीड़े को नीम ही प्यारी लगती है। गँवार अमृत ही को बिष समझता है। (७) बिष में क्या लाभ है ? थोड़ा सा लाभ हुआ और पूँजी भी जाती रही। (८) बिष और अमृत दोनों को एक साथ मिला दिया गया। जिसने समझ लिया वह तो उसको बिष ही समझता है। (९) ऐ मनुष्य ! बुद्धि और अबुद्धि में क्या धरा है ? जब तक पहिचान नहीं आती तब तक मूढ़ को समझ नहीं होती। (१०) बुद्धि हीन मनुष्य के क्या गुण कहे जायें ! लालच लगी हुई है और उसके साथ आशा का बन्धन है। (साखी) यह सब मरे हुये है। (यदि तुम इनका साथ दोगे) तुम भी मर जाओगे। सारा संसार स्वप्न का साथी है केवल बात की गवाही रह गई है।

नोट–१=बुद्धि। २=तुच्छ। ३=मरा हुआ। ४=साथी। ५=गवाही, साक्षी। ६=रह गई।

व्याख्या

अन्धे मिलकर बावलों के समान बात चीत कर रहे हैं। यह नहीं देखते कि लोक और परलोक में हर जगह छल और धोका हो रहा है। ब्रह्मा और उसकी बुद्धि ने मारा और वह सृष्टि करता रहता है। शेषनाग ने धोके में पड़ कर अपने सर पर सृष्टि का बोझ उठा रखा है। शिव और उनके साथी ऐसे भूले कि संहार करना ही अपना धर्म समझ बैठे। विष्णु को चौदह लोकों के राज का अभिमान है और वह उसी को सरदारी में भूले हुये। माया ने सब को कैसा धोका दे रक्खा है। इस माया का आदि अन्त कोई नहीं जानता। वह विचार मात्र है। तुम इससे इतना क्यों डरते हो ? नीम के कीड़े बने हुए नीम ही को मीठा समझ रहे हो और भूल से अमृत और बिष को मिला-कर दुखी हो। सुनो ! यह माया ऊँचा दीपक है जिस पर पतंग बन कर तुम जल रहे हो। इस में तुमको क्या लाभ है ? माना कि थोड़ी देर के लिये कुछ सुख मिल गया परन्तु इस थोड़े लाभ से तुम्हारी अपनी पूंजी भी हाथ से चली जा रही है। बुद्धिमान हुये तो क्या ! और निर्बुद्ध हुये तो क्या। सत दोनों अवस्थाओं से दूर है परन्तु समझे कौन ? मनुष्य लोभ और आशा में पड़ा हुआ कर्माधीन बनता जारहा है। यह सब तो मरे हुये हैं। सारे देवताओं की दशा तुम्हें दिखला दी गई। क्या अब भी तुम उनको नहीं पहिचानते ? सुनो ! यदि इनका साथ देते हो और इनको अपना इष्ट बनाते हो तो तुम भी इन मुर्दों के साथ मुर्दा हो जाओगे। संसार स्वप्न के खेल में भूला हुआ है। मुर्दे के नाम की ढोल बज रही है और उसी की साक्षी पर तुम अभिमान कर रहे हो।

बारहवीं रमैनी (१२)

[भ्रम]

१. माटिक[1] कोट[2] पषानक[3] ताला ।
सोई बन सोई रखवाला ।। १ ।।
२. सो बन देखत जीव डेराना ।
ब्राह्मण वैष्णव एक कर जाना ।। २ ।।
३. जोरि[4] किसान किसानी करई ।
उपजे खेत बीज नहिं परई ।। ३ ।।
४. छाँड़ि देहु नर झेलिक[5] झेला ।
बूड़े दोऊ गुरू और चेला ।। ४ ।।
५. तीसर बूड़े पारथ[6] भाई ।
जिन बन दाहे[7] दवा[8] लगाई ।। ५ ।।
६. भूँकि भूँकि कूकर मर गयऊ ।
काज न एको सियार से भयऊ ।। ६ ।।

साखी

मूस बिलारी एक संग, कहु कैसे रहि जाय ।
अचरज यक देखो हो सन्तो ! हस्ती सिंहहि खाय ।।

उल्था

(१) मिट्टी के किले में पत्थर का ताला दिया हुआ है । वही बन है और वही बन की रखवाली करने वाला है । (२) उस बन को देख कर जीव डर गया । ब्राह्मण और वैष्णव को एक ही समझा (३) किसान जोड़ जोड़ कर किसानी करता है । जो खेत में बीज

नोट=१=मिट्टी का । २=किला । ३=पत्थर का । ४=जोड़ कर । ५=धोका धड़ी । ६=धातु शोधने वाले । ३=जलाया । ८=दावानल ।

पड़ता है वही उत्पन्त होता है। उपजे खेत में बीज कैसे पड़े ? (४, इस धोके धड़ी को छोड़ दो (नहीं तो) गुरू और चेला दोनों ही डूब मरोगे (५) तीसरे धातु शोधने वाले डूबे जिन्होंने बन में दावानल लगादी। (६) कुत्ता (शीश महल) में भूँक भूँक कर मर गया। गीदड़ से एक काम भी नहीं हुआ (स.खी) चूहा और बिल्ली एक साथ कैसे रह सकते हैं। परन्तु एक आश्चर्य है, देखो सन्तो ! हाथी उलटा सिंह (शेर) को खारहा है।

व्याख्या

यह शरीर मिट्टी का किला है जिसमें मन रूपी पत्थर ताला लगा हुआ है। यह शरीर मन से बना हुआ है और मन ही भ्रम का स्थान और भ्रम का वन होता हुआ उसकी रखवाली करता है। भ्रम माया और ब्रह्म का झमेला है जिसको देख कर जीव डर गया ब्राह्मण और बैष्णव अर्थात भक्त और ज्ञानी दोनों का एक रूप समझता है क्योंकि यह दोनों भी मन माया के भ्रम जाल में फँसे हुए दिखाई देते हैं। कोई भी उनसे बचा हुआ नहीं दिखलाई देता। भ्रम से जब होगा जब ही उत्पन्न होगा। भ्रम का बीज मन के खेत में फल फूल लारहा है। उपजे हुये खेत में कैसे सत् का बीज पड़े और कैसे परमार्थ की समझ आवे ? इसलिये ऐ मनुष्यो ! इस भ्रम और धोका धड़ी को छोड़ दो नहीं तो गुरू और चेला दोनों ही नष्ट भ्रष्ट हो जाओगे। यह भक्ति और ज्ञान के यथार्थ रूप को न समझ कर और भ्रम में पड़ कर भवसागर में डूबते ही हैं तीसरे वह तपस्वी, कठिन तपस्या करने वाले, शरीर के शोधने वाले पार्थी भी डूबेंगे जो मन रूपी बन में भ्रम की अग्नि (दावानल) लगाकर उसको जला रहे हैं। शरीर के कष्ट देने से क्या होता है इन सब की दशा उस कुत्ते के सदृश है जो शीश महल में पड़ कर अपनी ही छाया के भ्रम से भूँक भूँक कर मर गया या उस गीदड़ के समान है जो चिल्लाता तो बहुत था परन्तु असली काम उससे कुछ न बन पड़ा।

माया बिल्ली है और जीव चूहा बना हुआ है। कैसे सम्भव है कि बिल्ली चूहे पर बिना झपटे हुये रह सके! बिल्ली के पास रहते हुये चूहे को कुशल नहीं है परन्तु आश्चर्य है कि जिस जीव को हम यहाँ चूहा कह रहे हैं वह वास्तव में सिंह था केवल अपने भ्रम से चूहा बना हुआ है और हाथी रूपा माया उसको खा रही है। यह आश्चर्य की बात है।

तेरहवीं रमैनी (१३)

[भ्रम]

१. नहिं परतीत जो यह संसारा।
द्रव्य[१] की चोट कठिन को[२] मारा॥ १॥
२. सो तो शेषै[३] जाय लुकाई[४]।
काहू के परितीति न आई॥ २॥
३. चले लोग सब मूल गँवाई।
यम[५] की बाढ़ि[६] काट नहिं जाई॥ ३॥
४. आजु[७] काज जिय[८] कालि[९] अकाजा।
चले खादि दिग्गन्तर[१०] राजा॥ ४॥
५. सहज विचारत मूल गँवाई।
लाभ ते हानि होय रे भाई॥ ५॥
६. ओछी[११] मती[१२] चन्द्र गो[१३] अथई[१३]।
त्रिकुटी संगम[१५] स्वामी बसई॥ ६॥

नोट—१=तत्व। २=किसने। ३=बाकी। ४=गुम होंगे। ५=यमराज। ६=तेज धार। ७=आज। ८=ऐ जीव। ९=कल। १०=दिशायें ११=उल्टी। १२=बुद्धि। १३=गया। १४=डूबा। १५=मिलाप।

७. तब ही विष्णु कहा समुझाई ।
मैथुन अष्ट[१] तुम जीतहु जाई ॥ ७ ॥
८. तब सनकादिक तत्व विचारा ।
ज्यों धन पावहिं रंक[२] आपारा[३] ॥ ८ ॥
९. भव[४] मर्य्याद बहुत सुख लागा ।
यहि लेखे सब संशय भागा ॥ ९ ॥
१०. देखत उत्पति[५] लागु न बारा[६] ।
एक मरं एक करं विचारा ॥ १० ॥
११. मुये गये की काहु न कही ।
झूठी आश लागि जग रही ॥ ११ ॥

साखी

जरत जरत से बाचहू[७], काहे न करहु गोहारि[८] ।
विष विषया[९] कै[१०] खाय हु, राति दिवस मिलि झारि ॥

उल्था

(१) जो प्रतीति नहीं आई तो इस संसार में किसने तुमको द्रव्य की चोट लगाई ? (२) यह सब द्रव्य शेष (बाकी) में लय हो जायेंगे । ऐ भाई ! लाभ से हानि हो रही है । (३) लोग असल पूँजी को खो खो कर चले जा रहे हैं । यमराज की बाढ़ किसी से काटी नहीं जाती । (४) काम करने का अवसर आज है । कल पर टालने से हानि होगी । (देखो) लोग बोझ लाद लाद कर दिगाँतर को चले जारहे हैं । (५) साधारण विचार में असल पूँजी के खो जाने का भय है और यहाँ लाभ से भी हानि होती है । (३) दृष्टि उलट कर दृष्टि साधन द्वारा त्रिकुटी के स्थान पर जहां स्वामी रहता हैं ध्यान करने से आँख उलट गई । चान्द्रायण लग गया । वहाँ विष्णु

नोट=१=आठ प्रकार के मैथुन । २=कंगाल । ३=बहुत । ४=ब्रह्म । ज्योति । ५=सृष्ठि । ६=देर । ७=बचो । ८=पुकार ९= जहरीला विष वाला । १०=क्यों । ११=इकबारगी, एक साथ

सतसङ्ग

हुजूर परमसंत परमदयाल पं० फकीरचन्द जी महाराज, मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

तिथि २० दिसम्बर, १९७४

(शिव शब्द सागर (द्वितीय भाग) पृष्ठ १५९)

अपनी ओर निहारिये, औरन से क्या काम ।
औरन से क्या काम, काम अब अपना कीजे ।
समय अमोलक मिला, चित कहीं और न दीजे ॥१॥
चित न दीजे और ठोर, नर जन्म सुफल हो ।
अपना करो उपकार, हृदय नव शुद्ध विमल हो ॥२॥
शुद्ध विमल हो हृदय, सोध ले अपनी काया ।
काया मध्य रहे, ब्रह्म जग संतन माया ॥३॥
संसृत माया कल्पना, कल्पित क्रोध और काम ।
अपनी ओर निहारिये, औरन से क्या काम ॥४॥

सुबह यहाँ आया । रामचन्द्र की स्त्री गोविंदी की शक्ल देखी वह उदास थी । पूछा 'क्या हुआ है ?' कहने लगी कि चार दिन हुए बाहर सोयी हुई थी मकान को छत पर से ईंट गिरी । वह कहती है कि मैंने उसे दो इंजक्शन लगाये और दवाई भी दी और अब उसे आराम है । मैं सोचने के लिए मजबूर हो गया कि क्या फकीरचन्द तुमको पता है कि उसे ईंट लगी, तुमने उसे इंजक्शन लगाये और दवाई दी ? नहीं, नहीं, नहीं और नहीं ! ऐसे अनुभव मेरी जिन्दगी में हर रोज आते रहते हैं । उस समय मुझे यह ख्याल आया, मुद्दत से आया हुआ था, कि मैं राज को दुनिया को बता जाऊँगा अपना काम तो मैंने कर लिया, यद्यपि वह अभी पूरा नहीं हुआ । मेरा निजी काम था अपना घर जाना । मेरा घर कहाँ है ?

मन का अमन बिमन करे, सोहै सन्त सुजान।
सोहै सन्त सुजान, ज्ञान का रूप है सोई।
आवागमन को मेट, लीन निज रूप में होई ।।१।।

संत वह है, जो अपने घर में रहता है। घर है प्रकाश और शब्द ब्रह्म – पारब्रह्म प्रकाश और शब्द घर का तो पता मुझे लग गया। किसकी दया से ? पहले तो हुजूर दातादयाल जी महाराज की दया से, जिन्होंने मेरी यह जिज्ञासा मिटाने के लिऐ कि मेरा घर कहाँ है, यह काम मुझे दिया। उन्होंने फरमाया था कि सच्चे राधास्वामी दयाल के दर्शन मुझे सतसंगियों के रूप में होंगे। और अब वे मिल गये। आज सुबह यह बात सुनी तो मुझे ख्याल आया कि यह राज मैं सतसँगियों को बता दूँ। मैं काम करता हूं और मेरे मजमून मानव मन्दिर दयाल, होशियारपुर टाइम्स और जनता जनार्दन में छपते हैं। रात को मेरे दिल में ख्याल था कि मैं संसार को कुछ कह जाऊँगा। जब यह आखिरी शब्द पढ़ा गया।

अपनी ओर निहारिये, औरन से क्या काम।
औरन से क्या काम, काम अब अपना कीजे।
समय अमोलक मिला, चित कहीं औरन दीजे ।।१।।

इस शब्द को सुनकर मेरे दिल में यह ख्याल आया कि मेरा काम क्या है। एक तो अपने घर जाना। घर का पता तो लग गया कोशिश करता रहता हूं। हजूर दातादयाल जी महाराज ने फरमाया था—

तेरा रूप है अद्‌भुत अचरज, तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल सनेही ।।

अब यह गुरु की आज्ञा है जगत कल्याण काम करने की। हुजूर दातादयाल जी महाराज का हुक्म था—

तू तो आया नर देही में धर फकीर का भेषा।
दुःखी जीव को अंग लगाकर लेजा गुरु के देसा।

तीन ताप से जीव दुःखी, निबल अबल अज्ञानी ।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी ।

तेरा काम था —

ले प्रसाद यह सतसंगत का, हो जा भव निधि तारण ।

तो ख्याल आता है कि यह करना भी तो मेरा ही काम है । इसलिये जब तक शरीर है काम किये जा फकीर ! इसलिए काम करता हूँ । क्या कहना चाहता हूं ? गोविंदी की कहानी सुनी और भी सब सुने हुए अनुभव बताता रहता हूँ । जो कुछ इस संसार में किसी को मिलता है, वह उसको अपने ही विश्वास, ख्याल और श्रद्धा का फल मिलता है । श्रीमती गोविन्दी के बारे में तो मुझे पता नहीं लगा कि उसके अन्दर जो बाबा फकीर प्रगट हुआ । जिसने इंजेक्शन लगाया और दवाइयाँ दी, वह कौन था ? वह उसका अपना ही विश्वास-था । तो इससे यह साबित हुआ कि जैसा किसी का विश्वास होता है उसके अनुकूल उसकी मदद होती है । इस समय देश में, क्या हो रहा है । भारत के ही नहीं बल्कि सारी दुनियाँ के क्या २ ख्यालात हैं हमारे ? रेडियो पर सुना कि मिलावट करने में पंजाब पहले नम्बर पर आया है । अब जो आदमी धोखा फरेब, मिलावट और हेरा फेरी करता है – घरेलू तौर से, सामाजिक तौर से ये मुल्की तौर से । इनको कर्म का फल मिलेगा । इसलिए इस समय ये जितनी मिलावटें हो रही हैं और लोग दवाइयों में और खाने वाली चीजों में मिलावट करते हैं — क्यों अपने स्वार्थ और चार पैसे कमाने के लिए । यह तो बाहर की मिलावट है । मगर ये राजनैतिक दल क्या कर रहे हैं ? काँग्रेस, अकाली, जनसंघ या और दल क्या कर रहे हैं ? अपने अंतर और बाहर और ये अपने कर्म से बच कैसे सकते हैं और फिर महात्माओं की दशा देखो । जितने ये पंथ और गद्दियाँ हैं हम महात्मा लोग क्या करते हैं ? न तो हम किसी के अन्तर जाते हैं और न मरते समय हम किसी को ले जा

हैं। केवल अपना विश्वास काम करता है। तो जो हम महात्मा मिलावट करते हैं, उनका क्या प्रभाव होगा। क्योंकि मेरे जिम्मे जगत-कल्याण का कार्य है, इसलिए मैं अपना कार्य कर जाना चाहता हूँ।

अपनी ओर निहारिये, औरन से क्या काम।
औरन से क्या काम, काम अब अपना कीजे।
समय अमोलक मिला, चित कहीं औरन दीजे।१।

मेरे जिम्मे ये काम हैं — (१) जगत-कल्याण का, (२) नाम दान का और (३) जीवों को भव-सागर से पार करने का। मुझे तो पूर्ण विश्वास हो गया कि सचाई क्या है। अब क्योंकि यह मेरा कर्तव्य है, इसलिए कहना चाहता हूँ कि ऐ मानव जाति ! लाख तुम भू० एन० ओ० बना लो, (conferences) करलो, लाख तुम विश्व धर्म सम्मेलन करो या सतसंग कराओ, मानव जाति का भविष्य शुभ नहीं होगा।

कर्म प्रधान विश्व करि राखा।
जो जस करहिं, सो तस फल चाखा।।

मेरे जिम्मे यह काम था जो हुजूर दातादयाल जी महाराज ने लगाया था। इसलिए मैं इसे अपना कर्तव्य समझकर कहे जाता हूं कि जब तक मानव जाति अपने मन, वचन एवं कर्म को शुद्ध नहीं करेगी दिलों से घृणा, द्वेष ईर्ष्या, स्वार्थ और मिलावट को दूर नहीं करेगी, तब तक यह सुख की श्वास नहीं ले सकती, नहीं ले सकती। यह है परोपकार जो मैं कर जाना चाहता हूँ। यह है मेरा कर्तव्य।

आप लोग मेरे सतसंग में आते हैं। मैं अपना काम कर जाना चाहता हूँ। मैं संसार मैं आया हूँ इसी मतलब के लिए। मेरे ग्रह ही ऐसे हैं। तभो तो मैं निर्भय होकर कह देता हूं कि मैं सन्त सतगुरू बख्त हूँ। सतगुरू नाम है समझ और ज्ञान का। जब तक आदमी में

धोखा–फरेब की मिलावट या धर्म-कर्म की मिलावट या गलत विचार की मिलावट है, वह संसार में सुखी नहीं होगा। कई बार सोचता हूं कि मेरे जैसे संसार में करोड़ों संत और ऋषि आये। क्या वे संसार सुखी कर गये? तू क्या करेगा? फिर सोचता हूँ कि यह मेरा कर्तव्य है। मैं अपना कर्म किये जाता हूँ और इस समय के राजनैतिक नेताओं को, सामाजिक नेताओं को, धर्म-स्थानों के मालिकों को और दुनियादारों को कह देना चाहता हूँ कि सुख के लिए मुँह धो डालो। अर्थात सुख की आशा छोड़ो। ये दुःख कभी बंद नहीं होंगे, जब तक तुम्हारी नियत साफ नहीं होगी।

क्योंकि मेरा कर्तव्य था, इसलिए मैंने यह मानवता मन्दिर बनाया और अपने प्यारे बच्चे दुर्गादास को तकलीफ दी और हरविलास और मास्टर मोहनलाल या दूसरे जिन्होंने मेरी मदद की, उनका आभारी हूँ। अब भी चाहता हूं कि जो सज्जन यह समझते हैं कि मेरी विचार-धारा लाभदायक है, वे इस विचार धारा को फैलाते रहें और मानवता–मंदिर की सहायता करें।

वे करें या न करें, मैं मजबूर नहीं करता। मेरे जिम्मे तो एक कर्तव्य है, मैं तो करूँगा ही। हमें यह शरीर किसी उद्देश्य के लिए मिला है। दुनियाँ में कुछ करने के लिए आये हैं। यह कर्म का स्थान है। गुरू नानक साहेब जी फरमाते हैं—

कर्म खण्ड की बाती जोर।

तो मेरा यह कर्म-भोग है। मैं यह काम करता हूं। इसका नतीजा क्या निकले, पता नहीं नहीं। इसको तरफ मेरा ध्यान नहीं है।

अपना करो उपकार, हृदय तब शुद्ध विमले हो।

मैंने तो अपना उपकार कर लिया। हृदय शुद्ध हो गया। कल का पता नहीं क्या हो? केवल आप लोगों की दया से मैं इस रहस्य को समझ सका हूँ। यदि हुजूर दातादयाल जी महाराज मेरे गुरु

पदवी न देते तो शायद इस रहस्य को न समझ सकता, इशारा तो सब सन्तों ने किया पर रहस्य को किसी ने नहीं खोला। अब रहस्य को खोलने का समय आया है। इस समय गुरू और चेले में, खुराक में, दूसरी चीजों में या आपस में घरों में कितना धोखा फरेब है ! जब तक यह धोखा फरेब है, मन शुद्ध नहीं हो सकता। मेरा मन शुद्ध हो गया है। मगर यह नहीं कह सकता कि कल को मेरे साथ क्या हो ? यह मेरे वश में नहीं है। मैं अपना कर्तव्य पूरा कर चला। सबको अपना अपना कर्म, जिसको प्रकृति ने उसके जिम्मे लगाया है, नेक नीयत से करना चाहिये। मेरा भाई मर गया। मैंने अपनी में उसके साथ अपना कर्तव्य पूरी तरह निभाया। मैं अपनी आत्मा को जानता हूं। मैंने अपनी पत्नी एवं अपने बच्चों के साथ अपना कर्तव्य निभाया और अब आपके साथ भी निभा रहा हूँ। मुझे खुशी है कि मैं अपना कार्य खुशी से करता हूँ। मैंने अपने धर्म को सच्चाई से निभाया है।

शुद्ध विमल हो हृदय, सोध ले अपनी काया।
काया मध्य रहे ब्रह्म जग संसृत माया॥

जो आदमी अपने मन को शुद्ध नहीं करता, वह इस गति को जो प्रकाश और शब्द है, वहाँ जा नहीं सकता। ये जितने संत गद्दियाँ वाले हैं, उन्होंने हेरा फेरी की है। वे स्वयं तो किसी के अन्तर में नहीं जाते थे, मगर इस रहस्य को परदे में रखकर धन, मान और बड़ाई ली। तो उनके मन कैसे शुद्ध हुए और वे ऊपर कैसे गये होंगे ? मेरी बुद्धि काम नहीं करती, मेरा दिमाग काम नहीं करता। डेरे बनाये गये होंगे।

संसृत माया कल्पना कल्पित क्रोध और काम।
अपनी ओर निहारिये औरों से क्या काम॥

कल्पना का तो मुझे पता नहीं लगता था। तुम लोगों की बदौलत मेरी आँखें खुल गयी। सच्ची बात को सुनने के लिए कोई तैयार

नहीं। ये सब जो तुम देखते हो ये तुम्हारे अपने मन के विचार हैं। अपने विचार से और कल्पना से ही दुख सुख, अमीरी–गरीबी सब पाप पुण्य अपने ही संकल्प का नतीजा है।

मैं अपने कर्तव्य को पूरा कर चला हूँ। यह नहीं देखता कि इसका अन्तिम परिणाम क्या होगा। मगर इन नेताओं से इतना कह देना चाहता हूँ कि सन्त मत की शरण में आओ। मानव कल्याण कोई दूसरी संस्था नहीं कर सकती। यह मेरा अनुभव है। सिवाय सन्त मत की शिक्षा के कोई भी मानव जाति का कल्याण नहीं कर सकता।

ऐ मेरे प्यारे भाई! देखो सम्भल के चलना।
खोटे कर्म न करना, खोटी न बात करना।
दुःख दोगे दुःख मिलेगा, सुख दोगे सुख मिलेगा।
मारोगे तुम किसी को, फिर दुख पड़ेगा सहना।
कौल और ख्याल कर तब, दरिया से है मुसाबा।
तुम देखना न इनकी, लहरों में बहके बहना।
मन इंद्रियों पै भाई, जब्त रखना तुम बराबर।
जाबित बने रहोगे, खुशहाल होके रहना।
अपनी निशिश्त रखना, तुम आत्मा पै हरदम।
आत्म स्वरूप रहकर, संसार में विचरना॥

सबको राधास्वामी।

—•—

Grams : 'Gwalior Textiles'

Gwalior Textiles

Dealing in :–

POLY AIR, TOEEN & GEVARDEEN

38–B, Majlis Park, DELHI-110033

Wanted Agent

Wanted Agents (Male/Female) Candidates do this work at own Area Salary Rs. 300/–, Commission and T. A. Extra.

QUALIFICATION :—Candidate should be minimum Matric or Higher Secondary.

AGE :—16 to 45 years.

Sent applications only in Hindi or in English. Registered letter at following address. :—

Gwalior Textiles,

38–B, Majlis Park,

DELHI–110033.

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

सफेद दाग

हमारे गारन्टेड इलाज से सफेद दाग के हजारों मरीज पूर्ण लाभ प्राप्त कर चुके हैं। हमारे इलाज से ३ दिनों में ही लाभ लगता है। आप भी रोग विवरण लिखकर एक फायल मुफ्त दवा मँगाकर देखें कि दवा कितनी तेज है।

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं, हमारे आयुर्वेदिक तेल से बालों का पकना रुक कर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तेल दिमाग और आँखों की कमजोरी को दूर करता है। हजारों मनुष्यों ने व्यवहार किया और लाभ उठाया है। मूल्य ११) फुल कोर्स ३०) रु०।

स्त्री-पुरुष के गुप्त रोगों पर मुफ्त सलाह

शादी से पहले या बाद शरीर में कमजोरी महसूस होती हो बचपन में गलत कार्यों या बुरी संगत में रहकर जीवन निराशा से भर गया हो, स्वप्नदोष या पेशाब के साथ पोषक द्रव्य जाते हों, तो अपनी खोई हुई जवानी और ताकत प्राप्त करने के लिए रोग विवरण भेजें। स्त्रियाँ भी अपने गुप्त रोग के बारे में लिख सकती हैं। पत्र गुप्त रखा जाता है।

पता—
शान्ति कुटीर आश्रम (म० ५)
पो० मैरा बरीठ (पटना) ८०५१०५

धन्यवाद श्री कृष्ण कुमार जी सलापर से २० रु० एवं श्री नन्दलाल कौल से ५ रु० मनुष्य बनो की सहायतार्थ प्राप्त हुये हैं ईश्वर से कामना है कि उन्हें चिरआयु बनाये एवं उनकी मनोकामनायें पूर्ण करें।

—प्रकाशक

परमदयाल फकीरचन्द जी कृत हिन्दी पुस्तकें

दयाल फकीर की जीवनी	३)५०
मानव धर्म प्रकाश भाग १	)७५
मानव धर्म प्रकाश भाग २ (श्री दुर्गादास कृत)	१)
आवागवन उर्फ जीवन रहस्य	१)५०
सार का सार भाग १ व २	५)
गरुड़ पुराण रहस्य	१)७५
सन्त सत्गुरु वक्त	१)५०
अगम वाणी भाग १, २, ३	३)
सतपः	)५०
बारहमासा की व्याख्या	२)५०
सुरत शब्द योग	१)
निर्वाण से परे	१)
बेहद्दी या अपार के परे	१)२५
ईश्वर दर्शन	१)२५
मेरी धार्मिक खोज	१)२५
गुरु महिमा	१)
गुरु बन्दना	)७५
अजायब पुरुष	१)
सार तत्व सचाई और शान्ति	१)
आदि अन्त	१)२५
पांच नाम की व्याख्या	१)५०
सत ज्ञान दाता भाग १ व २	२)
नाम दान	१)
उस घर की खोज	१)
अगम विकास	१)
निर्वाण	१)
अनुभव ज्ञान प्रकाश	१)
ज्ञान योग	१)

अन्य धार्मिक पुस्तकें

सत सनातन धर्म या सत मानव धर्म	३)
जगत कल्याण	)७५
विश्व धर्म भाग १ व २ व ३	१)७५
फकीर वचनामृत	)५०
कर्म भोग या मौज भाग १व२	१)७५
राधास्वामी शताब्दी पर मेरी भेंट भाग १ व २	२)५०
जगत निस्तार	१)२५
जगत उभार	१)
मानव कल्याण भाग १, २, ३, ४, ५	६)
अद्भुत मोती	१)
५० वर्षीय फकीर अनुभव	)७५
मेरा ८३ वर्षीय अनुभव	१)२
मानवता युग धर्म	८)०५
आकाशी रचना	)५०
आजादी की कुंजी	)७५
शिव फकीर पत्रावली	१)५०
हृदय उद्गार	१)
कबीर सार शब्द व्याख्या	१)
रचना का भेद	)७५
नव विवाहितों को उपदेश	)२५
उन्नति मार्ग	)५०
गूढ़ रहस्य व्याख्या	२)५०
फकीर प्रवचन	)७५
सार भेद	)२५

Regd. No. L-ALG—28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक, स्त्री उपयोगी, स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती' सिलसिले के उपन्यास तथा परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।

डाक खर्च सब का अलग है।

पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

कार्यालय

मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,

अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं० 170

श्री Chilwar Narsimhlu Book-Seller

V & PO - Banswara

Nizamabad - AP

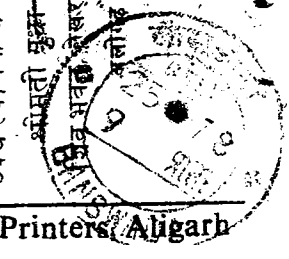

सम्पादक — प्रभुदयाल मीतल

व्यवस्थापक व प्रकाशक—

श्रीमती मुद्रा मीतल

शिव भवन, लेखराज

अलीगढ़

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh